

# Guru Nanak Puja

Date : 23rd November 1999  
Place : Noida  
Type : Puja  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

|         |         |
|---------|---------|
| Hindi   | 02 - 05 |
| English | -       |
| Marathi | -       |

### II Translation

|         |         |
|---------|---------|
| English | 06 - 07 |
| Hindi   | -       |
| Marathi | 08 - 08 |

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

आज गुरु नानक साहब का जनम दिन है और सारे संसार में मनाया जा रहा है वैसे। और आश्चर्य की बात है कि इतना हिन्दुस्तान में मैंने नहीं देखा, फर्स्ट टाइम इतना पेपर में दिया है, सब कुछ किया है। उन्होंने सिर्फ सहज की बात की। सहज पे बोलते रहे। हमेशा कहा, कि सब जो है बाहर के अवडंबर हैं। धर्म के बारे में कहा, उपवास करना, तीर्थयात्रा करना और इधर जाना, उधर जाना, ये सब धर्म के अवडंबर हैं और आपको सिर्फ अपने अन्दर जो है उसको खोजना है। अपने अन्दर जो है उसको स्थित करना है। बार बार यही बात कहते थे। उन्होंने कोई दुसरी बात कही ही नहीं। मतलब यहाँ तक कि कोई भी रिच्युअल की बात नहीं करी उसने। उसके बाद जब तेग बहादूर जी आये तो उनका भी आज ही शहीद दिन है, कल है, कल है। कल है उनका दिन। तो वो भी उसी विचार के थे। पर जो लास्ट गुरु थे, उन गुरु ने जो वृद्ध हो रहा था इसलिये सब बनाया, कि आप कड़ा पहनिये, बाल रखिये, ये सब जो चीज़ें बनायीं, ये सब उन्होंने बनायी। पर गुरु नानक साहब ने तो सिर्फ स्पिरिट की बात की। उन्होंने कहा कि बाकी सब चीज़ें बेकार हैं। बिल्कुल साफ़ साफ़ कहा है। कोई अब पढ़ता ही नहीं अब करें क्या! एक उँगली रखेंगे, ऐसे पढ़ेंगे, यहाँ तक आयेंगे फिर वहाँ तक पहुँच के फिर उँगली रखेंगे। इस तरह से कोई पढ़ सकता है। अगर उसको ठीक से पढ़ा जाए और उस पर मनन किया जाए तो ये जो शब्दजाल है ये खत्म हो जाएगा। पर लोग सब उसी में फँसे हुए हैं। और इसी में, सिख लोगों का देखिये, क्या हाल है! कहीं नहीं। अन्दर की खोज तो है ही नहीं उनके अन्दर, जो होनी है। अन्दर की खोज ही नहीं है तो फिर कहाँ से आप सिख धर्म को फॉलो कर रहे हैं। यही सिख है और उसको वो कहते हैं सिखखी। ये आपको हमने लिख के दिया है, ये अब पढ़िये इनको। और जितने बड़े बड़े उस वख्त में, उस जमाने में पहले भी और बाद में भी, बड़े बड़े संत हुए, तुम लोग तो जानते ही थे कौन संत है, कौन असंत है। उनकी सब की कवितायें और ये सब उन्होंने अपने ग्रंथसाहब के लिये की इसलिये ग्रंथसाहब पूजनीय है। क्योंकि ऐसे लोग, जो की जाने हुए थे उस वख्त में, माने हुए थे कि ये बड़े भारी गुरु हैं और इन्होंने बड़ा कार्य किया और जो स्पिरिच्युअल है उनको सबको संघटित कर दिया उन्होंने।

यही सहजयोग में हम करते हैं कि हम किसी एक विशेष को नहीं मानते। सब का हम आदर करते हैं। सब का सम्मान करते हैं। ये उन्होंने उस वख्त किया। पर उस वक्त जो कहा था वो शब्दों में खतम। उससे आगे कोई गया नहीं। कबीर ने लिखा है, 'पढ़ी पढ़ी पंडित मूर्ख भय', वही बात है कि सब मूर्खों को तैयार किया उन्होंने। अब न तो कोई लड़ाई हुई, न कुछ हुआ। तो ये पगड़ी रखने की जरूरत नहीं। और कच्छे रखने की जरूरत नहीं है। और फलाने और क्या, क्या, कंघी रखने की जरूरत नहीं। सब चीज़ें वो उसी तरह से कर रहे हैं। और शराब पीते हैं। शराब में उनको कोई दिलचस्पी नहीं। शराब को बहुत मना किया है उन्होंने। जो आदमी अपनी चेतना की बात करेगा, वो शराब को सपोर्ट ही नहीं कर सकता। और उधर शराब पीते हैं। इधर ये सब करने का, इसमें बड़े पर्टिक्युलर है। पगड़ी लगायेंगे, ये करेंगे, वो करेंगे, एक क्लॉन जैसे बनाना चाहते हैं और उस क्लॉन में रहना चाहते हैं। और इसलिये ये सब करने से अन्दर की जो बात कही है वो कब होने वाली। सो, इसी तरह से चलता रहा है इन

लोगों का। पता नहीं कैसे! दे हैव टेकन टू थिस काइंड ऑफ रिच्युअलिज़्म और बिल्कुल बाहर आ गये थे। बाह्य में आ गये। बाह्य से ही सब कुछ उनको समझ में आता है। अब इन लोगों को मोड़ना कोई कठिन काम तो नहीं होना चाहिए। उन्होंने वही कहा है जो हम कर रहे हैं। उन्होंने किया नहीं। फर्क ये है। हमने किया है, उन्होंने किया नहीं। कहा है सहज समाधी लागो। कैसे? ..... (अस्पष्ट) पर कौन करेगा ये। रियलाइज़ेशन तो मेरे खयाल से दिया ही नहीं उन्होंने जहाँ तक। उनके दो शिष्य थे। उन दो शिष्यों को उन्होंने रियलाइज़ेशन दिया है। अब एक आदमी अगर दो शिष्यों को दे, तो उसका क्या इफेक्ट आ सकता है। लोगों ने उसका जो बाह्य स्वरूप था वो ले कर के वर्क शुरू कर दिया। बड़े बड़े वो बनाये, आप तो देखते हैं कितने सारे मंदिर बनाये। क्या क्या बनाया, सब कुछ! उसका कोई फायदा नहीं। मनुष्य कम बनाये। और बाकी बने वो सरदारजी हैं। वो क्या बताये! उनको किस तरह से समझाया जाए। अब सहज में आने लग गये हैं। मैं देखती हूँ। ८-१० सहजयोगी आते ही हैं, जो की सिख हैं। पगड़ी वगैरे लगाये रहते थे। बगैर पगड़ी के आते हैं तो मुझे पता नहीं। पर एक नामधारी सिख है। नामधारी हमें मानते हैं। वो लोग ज्यादा तर बैंकॉक में हैं। काफ़ी लोग आये, ५०-६० नामधारी। वो सफ़ेद पगड़ी पहनते हैं। पता नहीं उनकी क्या विशेषता हैं, मुझे नहीं मालूम। लेकिन वो फॉलो करते हैं। जो उन्होंने कहा होगा। इसी तरह से धर्म में डायव्हर्जन होते जा रहे हैं। पता नहीं कहाँ जा के पहुँचे हैं। आपस में लड़ रहे हैं। फायदा क्या! और उन्होंने तो ये कहा है कि 'मैं मुसलमानों का पीए हूँ। और इनका गुरु हूँ, हिन्दूओं का और उनका पीए हूँ।' किसी के समझ में तो आने वाली बात नहीं है। जब तक आप पार नहीं होते आपके समझ में नहीं आयेगा और यही बात है। यही होना जरूरी था, पर उनका प्रिपेरेशन था हमारे लिए। उन लोगों ने सबने आपको प्रिपेअर किया और अंत में हमारा काम है कि उन्होंने जो कहा कर के दिखाये। लेकिन ये दशा सब की हुई है। समझ में नहीं आता कि कितने लोग ऐसे खो गये हैं कहाँ से, कहाँ से।

हमारे यहाँ ज्ञानदेव की मैं बात बता रही थी, कि ज्ञानदेव कितने बड़े हो गये। और वो नाथपंथी थे। और उन्होंने कुण्डलिनी का लिखा भी है। पर ग्यानदेव के शिष्य हुये, वो अपने को वारकरी कहलाते हैं। और एक तमाशा है उनका। इतनी बड़ी बड़ी दो ज्ञानियां (झाँज) हाथ में ले कर के, दोनों मिला के एक किलो की, उसको कुटते फिरते जाते हैं पंढरीनाथ, पंढरपूर। और कपड़े, उसको लक्कर कहते हैं, माने झूठ के कपड़े पहन के जाते हैं, फटे हुए। बड़े सैक्रिफायसिंग और एक महिना कूटते कूटते वहाँ पहुँचते हैं। और रास्ते में तम्बाकू खाते हैं। ये वारकरी लोग। और फिर उन्होंने उसमें संप्रदाय बनाया। उस संप्रदाय में क्या विशेषता है, की जैसे वो एक पालखी निकालते हैं। ग्यानदेव की पालखी। जिनके पास की जूते नहीं थे पैर के, तो उनकी पादुका उसमें रखते हैं। और वो ले कर के गाँव गाँव जाते हैं। अब जिस गाँव जाते हैं, वहाँ पालखी आयी तो सब वहाँ खाना खाते हैं। फिर दूसरे गाँव गये, फिर पालखी आयी, वहाँ खाना खाते हैं। भीख माँगने का नया तरीका वहाँ बना हो। इस तरह की चीज़ें।

और तीसरा ये कि उनका जन्म हुआ था, जहाँ आळंदी में, पुणे के पास है। तो वहाँ औरतें एक पूरी कुंडी जिसमें तुलसी लगी हुई है और बिल्कुल मिट्टी से भरी हुई है। कम से कम तीन-चार सेर से कम नहीं हुई है। सर पे ले कर के आळंदी तक पैदल जाती है। ये आँखों देखा हाल है। समझ में नहीं आता क्या करें? और बहुत से लोगों ने उनके नाम पर ही इतना पैसा बनाया है। कुछ समझ में नहीं आता है। कैसे लोग इस चीज़ को मानते हैं। किसी भी

आदमी का नाम ले लो, पैसे बनाओ। और इसी तरह उसका सारा जो कार्य था खत्म हो गया। इतना ही नहीं, एक साहब है, वो ग्यानदेव पे बड़ा भारी लेक्चर देते हैं। वो बहुत पैसा बनाते हैं। सिर्फ लेक्चर दे के। अपने मन से जो चाहे वो बोलते रहें उनके बारे में। लोग अपना सुनते जा रहे हैं। इस तरह की अंधश्रद्धा भरी हुई है सब में।

और इसी तरह से गुरु नानक साहब के साथ भी हो गया। मैं देखती हूँ कि कोई जानता ही नहीं कि गुरु नानक साहब ने क्या कहा, क्या नहीं कहा। और यहाँ तक कि चंदीगढ़ बनाया है उन्होंने। चंदी सी बात करी है, हमारे आने की बात करी है। सबकुछ वर्णन किया हुआ है। कोई नहीं सुनता, कोई देखता भी नहीं। तो, इसी तरह हर एक का हो जाता है। पर अब जो है जिसको पार हो गये वो पार हो गये। क्यों कि आपको सत्य मिल गया तो आप झूठ नहीं स्वीकार कर सकते। और इसमें से कोई झूठ निकले भी तो खतम हो जाये। अब इतने लोग पार हो गये हैं सारे संसार में कि अब कोई झूठ नहीं फैल सकता। हमने जो कहा, वो टेप है, रेकॉर्ड है। सब कुछ है। तो कोई उसको बदल नहीं सकता। इसलिये मैंने किताब नहीं लिखी। क्योंकि टेप को तो सुनना पड़ता है। पर जो किताब है उसको तो हम पढ़े जा रहे हैं, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। इससे बेहतर है किताब कम लिखो। ज्यादा जो है, वो सुनने को हो। सुन, सुन के खोपड़ी में जायेगा। नहीं तो पढ़ने में बस, मनोरंजन हो रहा है, पढ़ रहे हैं। तो क्या फायदा!

और जब, आप देखते हैं कि सहजयोग का हाल होने वाला है, समझ में नहीं आता, कि अब तो ये बिगड़ नहीं सकते हैं। अब एक हद तक पहुँच गये हैं, अब नहीं बिगड़ सकते। ऐसा मेरा विश्वास है। गलत काम नहीं करना चाहिए। यही एक उनके दिये हुए से सीखना है। गुरु नानक क्या कह गये। किताब पे किताब लिख गये। गुरुवाणी पढ़ी है, तो यही कहा है, कि अपने को जानो, अपने को पहचानो। और लोग कर क्या रहे हैं? लेकिन सहज में ऐसा होगा नहीं। क्योंकि अब तो सबको पका लिया मैंने। अब तो नहीं बदल सकते आप लोग, चाहे तो भी कुछ नहीं हो सकता। जो हो गया सो हो गया। और कितना अपमान है उनका। और कितने उन्होंने तकलीफें झेलीं, कितनी उत्पत्ती हुई, पर जागृती नहीं दी, ये पॉइंट आज हम कह रहे हैं। कि जागृती नहीं दी, अनुभूती नहीं दी। तो फिर अब उसका जो भी करना चाहो, जैसे के वैसे। फिर आप किसी का नाम लीजिये, उस किताब में थोड़ी बदल होने वाला है। जागृती से ही होगा। और यही उनके सिख लेसन सबको लेना चाहिये कि हम इस तरह से गलत रास्ते से नहीं जाएंगे। या हम कोई अलग धारणा लगायें। ये बहुत जरूरी है। हम जो हैं, सहजयोगी हैं। इतना विशद रूप से सहजयोग समझते हैं, गहन समझते हैं कि अब इससे कोई और चीज़ निकालने की जरूरत नहीं। अभी भी एकाध-दो होते हैं कि ये ऐसा है तो ये करो, वो करो। सब बेकार की बात है। बिल्कुल, क्या कहना चाहिये, कि एक तरह का झूठा ही गँवा रहे हैं वो। सच्चाई कुछ भी नहीं। जो चीज़ कही ही नहीं वो चीज़ कर रहे हैं। पर अब ऐसा ही की अब वो कान से सुनेंगे। पता चलेगा। वो तो कान से तो जायेगा ना सर में। पढ़ने से नहीं जायेगा। समझेंगे कि ये नहीं काम आने वाला। जो नहीं कहा, नहीं कहा। क्यों करते हो ऐसे। पर वो पुराने संस्कारों की वजह से है। उससे भी होता है। जो हमारे पुराने संस्कार हैं कि दूसरा की हमारा जन्म इसमें हुआ तो वैसे हम चलें। ये जब तक नहीं छूटता है, तब तक सहज का असली रूप उतरता नहीं। और आपको तो स्पेशल बनाया हमने। स्पेशल लोग हैं आप। स्पेशल धर्म आप जानते हैं। सब कुछ आप जानते हैं। अपने बारे में जानते हैं, दूसरों के बारे में जानते हैं। जागृती आप कर सकते हैं। सब आज समझ सकते हैं। आप तो संपूर्ण हो गये। अब इसके बाद बिगड़ने की क्या बात है।

तो इस पर आज मुझे ये विचार आया कि गुरु नानक साहब ने कितना सहन किया, वाईफ भी उनकी ठीक नहीं थी। बहुत परेशान थे। और कर के उन्होंने जो बनाया उसका क्या हाल है। ऐसे ईसा मसीह का, ऐसा ही सबका हाल है। महम्मद साहब का यही हाल है। सब से ज्यादा गुरु नानक साहब का हुआ, क्योंकि वो सब से लास्ट आये थे। और बहुत समझाया, बहुत कुछ किया। उसके बाद साईनाथ आये। साईनाथ कहते थे कोई जरूरत नहीं। सब बेकार है। साफ़ कह दिया उन्होंने। आपने कुछ चीज़ शुरू कर दी। तो सब लोग खराब हो जाये। जागृती नहीं दी। जागृती के बाद अलग है, सब एक हो जाते हैं, समझदार हो जाते हैं। उसके बगैर बहुत मुश्किल काम है। तो, उन्होंने तो किया ही नहीं ऐसे। कोई ऑर्गनाइज ही नहीं किया लोगों को, जोडा ही नहीं, कुछ नहीं। उनके शिष्य हो गये। बस। और हमने भी ऑर्गनाइज नहीं किया। हमारा कोई ऑर्गनाइज़ेशन नहीं है। कुछ नहीं। पर पार होने पर ऑटोमैटिक ऑर्गनाइज्ड हो जाते हैं। जैसे ये शरीर है। इसके सारे अंग-प्रत्यंग ऑर्गनाइज्ड है। उसी तरह से। कोई ऑर्गनाइज़ेशन नहीं है। कुछ नहीं है। सब ऐसे ही चला है। आप सब को अनंत आशीर्वाद हैं।

और ये ध्यान रखना है कि हमने जो पाया है, उसको विकृत नहीं करना है। इससे बढ़ के कोई और पाप नहीं है। उसको विकृत नहीं करना किसी भी वजह से।

# ENGLISH TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Today is the birthday of Shri Guru Nanaka. It is being celebrated through-out the world with so much of zeal that I have not seen in India. For the first time it has been advertised in so many papers and by different means.

Guru Nanaka always talked of Sahaja Yoga. Everything else, he said, is just showing off. About religion he said that observing fasts, going on pilgrimage, etc., are just meant to show off. Now you have to discover the power that is within you and establish it. Guru Nanaka kept on repeating the same thing again and again. He never talked of rituals: But when Guru Teg- Bahadur came, war with Mohammadan Rulers was being fought. So he prescribed Kada (iron bangle), sword (*kripan*) to keep them in the state of preparedness. But Guru Nanaka always talked of the spirit. He explained it very clearly, but no one heeded what he wrote. They will just put a finger on the couplet and read it out. Could we understand him this way? If we go through his writings properly and absorb it, then the whole Shabad-Jalam (*confusion*), in which most of the people are caught, will come to an end. See the condition of Sikhs !

Without looking within and experiencing the innate energy, how could one follow Sikh religion? Only this is the teaching of Guru Nanaka, this is what is called 'Sikh' (*learning*). All the saints of that age had the discretion to know who is a saint and who is not. All the Gurus incorporated their poems and experiences in Guru Grantha and that is why Guru Grantha is revered so much. Only the renowned Gurus contributed to it. They were so spiritual that they did churning of all the religious scriptures and put the substance in Guru Grantha.

That is what we do in Sahaja Yoga. We do not follow any particular saint or incarnation; we respect all of them and strike a balance. But all this was lost in words. People did not go deeper in them. That is why Kabira has written 'even the scholars went on reading and reading like fools, without absorbing any thing That is how a race of fools was created. Now there is no war being fought but they are so conditioned that they will wear Turbans, keep swords and combs etc. But they have no objection in consuming Alcohol. All the Gurus warned the disciples about the evil effects of alcohol. Any one talking of consciousness could never support wine. On the one side they will consume alcohol, on the other they wear turbans, keep swords and combs! Any way they wish to be part of that clan. This has affected their internal growth. They have taken to this kind of situation and as a result have become material beings. On material level they look to everything.

To transform these people, should not be difficult because we (*Sahaja Yogis*) are going by what the Gurus preached. Gurus could not give realization to people but we are giving realization. They talked of achieving 'Sahaja Samadhi', but did not tell how. Who will raise the Kundalini? Guru Nanaka gave realization to only two of his disciples. One Guru giving realization to only two of his disciples! What could be the effect on the society? So people started worshipping him at external level. Huge Gurudwaras were built. But there is no use. There are very few evolved beings, the remaining is just a race of Sardars. How could truth be told to them? But now Sikhs have started coming to Sahaja Yoga. I have seen many of them with turbans on. May be some of them are coming without turbans. One is Namdhari Sikh. There are many Namdhari Sikhs in Bankok. As many as fifty-sixty of them come to the Programme. They wear white turbans. I do not know what is their speciality, but they follow what Guru Nanak has said. That is how diversions are created and people start fighting amongst themselves. Guru Nanaka said that I am prophet of Mohammedans and Guru of Hindus. Until one is realized one cannot understand this. But it was necessary to prepare us for this day. Now it is our duty to work-out what they said. Things, however, went in opposite direction and many seekers were lost, no-one knows where!

I was talking about Gyan Deva,. He belongs to Nath cult. He wrote about Kundalini but his



disciples call themselves varkaris They take two heavy cymbals in their hands, wear jute clothes and go to Pandhari Nath, Pandhar Pur. It takes them one month to reach there. They travel on foot and thus consider themselves to be very sacrificing. All the way they chew tobacco. These Varkari people have created this cult. They take procession of Gyan Deva on a palanquin. Gyan Deva never afforded shoes when he was alive, but people place his slipper, in the palanquin and take the procession from one village to another. Wherever they reach the villagers offer them food and refreshment. It is a new method of beggary. At the birth place of Gyan Deva and places like Pune and Niwase women grow Tulsi in heavy earthen pots, lift it on their heads and walk in procession to Anandi. This I have seen myself. People have made lot of money in the name of Gyna Deva. But I do not know what to do to stop it.

All his purpose has forfeited. One fellow gives big big lecture on Gyan Deva, speaks whatever he feels like and there are people who listen to him with blind faith! Same is the case with Guru Nanaka. No one knows what he actually said. People have made Chandigarh, Guru Nanaka talked of Chandi. He talked of my incarnation on the earth. He explained every thing. But no one cares for it. Most of the prophets and Gurus have been treated like that. Of course you people have experienced the truth. So you cannot accept the falsehood. Falsehood gets finished in Sahaja Yoga. So many people have got their self-realization in the world. No one could spread falsehood now. Whatever I have told in Sahaja Yoga is taped and recorded. No one could change it. People could listen to tapes, but they go on reading books without understanding. This is the reason I told them to have more tapes and get the books printed. Listening to the tapes will definitely have impact on their minds. People take book reading as a means of entertainment. What is the use of it? But now Sahaja Yogis have reached a level from where they cannot go astray. They will not have to adopt wrong things. That is what we have to learn from Guru Nanaka. Guru Nanaka said 'know thyself? But what people are doing!

However, in Sahaja Yoga such things will not happen since I have convinced all of them. They cannot change now. No harm could be done now; what has happened has happened. Reading scriptures and Church Book will have no beneficial effect. To awaken one's energy is the lesson that we have to take from Guru Nanaka. We, Realized beings understand Sahaja Yoga so deeply that now there is no need to draw any other meaning of it. Still there are people suggesting rituals. It is all useless. I have never said so, yet people are doing what I have never said. So now when they listen to tapes of my lectures and understand that Mother has not said it, why should we do that? But because of old Sanskara (*conditioning*) we keep on observing certain rituals.

So long as we do not get rid of our conditionings, we shall not understand real Sahaja Yoga. I have made you very special people. You know the real meaning of religion. You know every thing, you know about yourself and about others. You could give realisation to people. So now you have become perfect. So what is there to go astray now? You cannot fall.

So today I thought of the pains of Guru Nanaka. How much he tolerated! His wife was not cooperative at all. What people have made of his achievements? These people are misusing Lord Christ, Mohammad Sahib and, above all, Guru Nanaka because he was the last incarnation. Shirdi Sainath incarnated after him. Sai Nath was against all the rituals and conditioning because these are misleading. After awakening, things change of course. Realized people become knowledgeable. Without realization it is not possible. So Sai Nath did not organize. We have not organized too. We have no organization. People automatically get organized after awakening, the way different organs of the body are organized. So without any organization everything is going on immaculately in Sahaja Yoga.

I bless you all. You have to keep in mind that we have not to pervert what we have achieved. It is most sacrilegious. We don't have to pervert it, perversion should not be allowed.

May God Bless You.

# MARATHI TRANSLATION

## (Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

आज गुरु नानक साहेबांचा जन्मदिवस सगळीकडे साजरा होत आहे. तरीही आपल्याकडे इतक्या उत्साहांत तो जसा अवेळी साजरा होत आहे तितका पूर्वी कधी मला दिसला नव्हता. नानकसाहेबांनी नेहमी सहजयोगच सांगितला आणि धर्माच्या नावाखाली उपास-तापास, तीर्थयात्रा, कर्मकाण्डांत गुंतणे इ. सर्व प्रकार वरवरचे असल्याचे सांगून त्यावर ते टीका करत. हे करणे म्हणजे धर्माचे अवडंबर माजवणे असे ते म्हणत. स्वतःच्या आत्मधील खऱ्या 'मी' चा शोध घेणे व त्यामध्ये स्थिरावणे हे त्यांच्या दृष्टीने महत्वाचे होते. पण त्यांच्या बोलण्याचा व त्यांच्या कवितांचा खोलवरचा गर्भित अर्थ समजून घ्यायला हवा ना? त्यांच्या ग्रंथ-साहेबांमध्ये त्यांनी अनेक थोर संतांच्या कवितानाही स्थान दिले व त्यांचे अभंग वा कविता ग्रंथसाहेबांमध्ये आदराने नमूद केल्या. म्हणूनच 'ग्रंथ-साहिब' हा ग्रंथ लोक पूजनीय मानतात. पण त्यांच्या अर्थाच्या खोलात जाऊन मनन केले नाही व नुसते शाब्दिक पठण केले तर काय फायदा होणार? ते नुसते शाब्दिक पांडित्यच, कबीरांनी म्हटलेच आहे "पढि-पढि पंडित मूर्ख भये" तसाच तो प्रकार. नंतरच्या गुरूंनी त्या काळाच्या युद्धजन्य परिस्थितीमुळे कडा घालणे, खंजीर राखणे, केंस न कापणे इ. गोष्टी सुरू केल्या असल्या तरी लोक तेवढेच पकडून बसतात. मग खऱ्या शीख धर्माचे ते कसे पालन करणार? म्हणूनच आपण पाहतो की शीख लोकांचीही आत्म्यापासून दुरावल्यामुळे आज वाईट स्थिती झाली आहे. नानक साहेब तर नेहमी आत्म्याबद्दलच बोलत व लिहीत असत. पण त्यांचा अर्थ लक्षात न घेता आजकालचे शीख धर्माच्या कर्मकाण्डामध्येच अडकले आहेत आणि आश्चर्याची गोष्ट म्हणजे दारू पिण्यात त्यांना अयोग्य असे काही वाटत नाही. नानकसाहेबांनी दारूला स्पर्शही न करण्यासंबंधी अनेकदा सांगितले कारण दारूमुळे माणसाची चेतनाच बिघडते. अशा कारणांमुळे त्यांच्यामध्ये बाह्य रुढीबद्दलच जास्त काळजी घेतली गेली व आत्मवस्तूपासून ते दुरावत गेले.

अशा लोकांना आपल्यामध्ये आणणे मात्र मुळीच कठीण नाही. कारण आपण जो सहजयोग सांगतो तोच नानकसाहेबांनी सांगितला. फरक एवढाच की त्यांना जागृति देता आली नाही तर तुम्ही ते सहज करू शकता. असे म्हणतात की त्यांनी फक्त त्यांच्या दोन शिष्यांना आत्मसाक्षात्कार दिला. त्यांचा काय उपयोग होणार? 'सरदारजी' खूप झाले पण माणूस होता तसाच राहिला. लोकांनी त्यांची खूप मंदिरे बांधली. आणखी उत्सव सुरू केले, बरेच काही केले पण हे सर्व बाह्यातून चालत आले. आता काही शीख लोक सहजयोगात येऊ लागले आहेत, बँकांकमध्ये मी पन्नास-साठ सफेद पगडीवाले

'नामधारी' पाहिले. नानकसाहेब स्वतःला मुसलमानांचा पीर व हिन्दूचे गुरु म्हणायचे. पण त्यांनी जे बीज पेरले त्याला आता अंकुर फुटणार आहे आणि तेच आपले काम आहे.

महाराष्ट्रातही ज्ञानदेव फार मोठे संत होऊन गेले पण त्यांच्यानंतरही लोकांची हीच तऱ्हा. लोकांनी पंढरीची वारी करायची, टाळ कुटत, फाटक्या कपड्यानिशी महिना-महिना पायी पंढरपूरची यात्रा करायची, तुळशीच्या माळा गळ्यात घालायच्या एवढ्यातच धन्यता मानली. वर पुन्हा तोंडात सतत तंबाखू! स्वतःला वारकरी समजून ज्ञानदेवांच्या पादुका त्यांच्या पायात वपलसुद्धा नव्हत्या. पालखीत ठेऊन त्यांची मिरवणूक काढत चालत वारी करण्या पलीकडे काही मिळवले नाही. पुन्हा पालखीच्या वाटेवरच्या गावातल्या लोकांकडून जेवण मागायचे, हे भीक मागण्यासारखे नाही तर काय?

नानकसाहेबांनंतर हेच झाले. त्यांची शिकवण, त्यांचा उपदेश सर्वजण विसरून गेले. चंदिगड जरूर बनवले पण "चंण्डि" येणार असल्याचे त्यांनी जे सांगितले ते कुणाच्याच लक्षात आले नाही. कुणाला समजलेही नाही. पण आता असे होणार नाही. शिवाय आम्ही जे सांगतो बोलतो ते सर्व Tape record केले जाते म्हणून त्यात पुढे-मागे कुणी बदल करू शकत नाही. म्हणून पुस्तके लिहिण्यापेक्षा टेप काढण्यावर माझा भर असतो. एक तर वाचणारे व त्याला समजून घेणारे थोडेच असतात, म्हणून ऐकून ऐकून तरी थोडे फार लोकांच्या डोळ्यांत जाईल असे मला वाटले. शिवाय सहजयोग आता अशा स्थितीला आला आहे की त्यात कुणी बिघाड आणू शकणार नाही. पूर्वी तसे नव्हते, त्यावेळेस सहजयोगाचे काय होणार अशी शंका येत असे, पण आता ती भीति नाही. जागृति झाल्याशिवाय प्रत्यक्ष अनुभूति होत नाही, म्हणून एकदा जागृति मिळाली की चुकीच्या कल्पना व चुकीच्या धारणा होऊ शकत नाही. मी नेहमी सांगत असे की सहजयोगी हे 'विशेष निवडले गेलेले म्हणून स्पेशल' लोक आहेत. तुम्ही सहजयोगीच सत्य जाणू शकता. स्वतःबद्दल व दुसऱ्याबद्दलही सर्व काही जाणू शकता, म्हणून आता सहजयोगाचे कोणी नुकसान करू शकणार नाही. तुम्ही एवढीच काळजी घ्यायची आहे की तुमच्यामुळे सहजयोगात कसलीही विकृति येता कामा नये; तसे करू पहाल तर त्याच्यासारखे दुसरे पापच नाही. म्हणून कुठल्याही कारणास्तव सहजयोगात कसलीही विकृति येऊ देऊ नका.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

०००